अव्यक्त वाणी सार (OCT 2019 – APR 2020)

17-10-19 (revise 17-03-07) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"श्रेष्ठ वृत्ति से शक्तिशाली वायब्रेशन और वायुमण्डल बनाने का तीव्र पुरुषार्थ, दुआ दो और दुआ लो"

- बापदादा देख रहे हैं मैजॉरिटी बच्चों के दिल में एक ही संकल्प है कि अभी जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे। अभी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। जब लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे तो लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा।

- पुरुषार्थ भी बहुत अच्छा करते हैं लेकिन पुरुषार्थ में एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता उसकी एडीशन चाहिए। हर एक अपने को चेक करे कि मैं सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ?

- वर्तमान समय के प्रमाण एक ही समय पर मन्सा-वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा चाहिए। मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन वा चेहरे द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन के प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग-अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी बहुत करनी है।

- सबसे सहज सेवा का साधन है - वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन है। आपकी रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती । सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है। वायुमण्डल का अनुभव दिल में छप जाता है।

- हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृत्ति से, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाना है, लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति सदा स्वच्छ हो क्योंकि किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई व्यर्थ वृत्ति या ज्ञान के हिसाब से निगेटिव वृत्ति है तो निगेटिव माना किचड़ा, अगर मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे। तो पहले अपने आपको चेक करो कि मेरे मन की वृत्ति शुभ रूहानी है?

- सबसे सहज पुरुषार्थ है जो सभी कर सकते हैं, वह यही विधि है सिर्फ एक काम करो किसी से भी सम्पर्क में आओ - "दुआ दो और दुआ लो।" चाहे वह बद्दुआ देता है।

- अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तो वृत्ति में अगर ज़रा भी किचड़ा होगा, तो वृत्ति से वायुमण्डल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेगा और वायब्रेशन बनता है वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है।

- आपकी दिल बापदादा का तख्त है। इसीलिए एक शब्द अभी मन में पक्का याद कर लो, मुख में नहीं मन में याद करो - दुआ देना है, दुआ लेना है। कोई भी निगेटिव बात मन में नहीं रखो। तब ही विश्व में, आत्माओं में फास्ट गति की सेवा वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की कर सकेंगे।

- अभी विश्व को बहुत आवश्यक्ता है। आप निवारण मूर्त बन जाओ। आपके निवारण मूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी।

- अभी बेहद में आओ । कोई कोई बच्चे ज्यादा गंभीर बनते हैं, गंभीर बनो लेकिन अन्दर गंभीरता हो,बाहर चेहरा मुस्कराता हो । मुस्कराता हुआ चेहरा सभी को पसंद आता है और ज्यादा गंभीर वाला चेहरा उससे डरते हैं, दूर भागते हैं । सहयोगी नहीं बनेंगे । जोर से हँसना नहीं मुस्कराना है ।

- बहुत काल का संस्कार आवश्यक है । अगर अंत में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बहुत काल में जमा नहीं होगा । और बहुतकाल में अगर आपका जमा नहीं होगा तो २१ जन्म का बहुतकाल का अधिकार भी कम हो जायेगा ।

- बापदादा कम्बाइण्ड है, कम्बाइण्ड रखो, अनुभव करो तो देखो पहाड़ भी रूई बन जायेगा। अनेक बार मैं ही पास हुआ हूँ, अभी रिपीट करना है। नई बात नहीं है, सिर्फ रिपीट करना है, यह स्मृति रखो।

- सारे दिन में बीच-बीच में 5 मिनट भी मिले, उसमें मन की एक्सरसाइज़ करो क्योंकि आजकल का जमाना एक्सरसाइज़ का है। तो 5 मिनट में मन की एक्सरसाइज़ करो, मन को परमधाम में लेके आओ, सूक्ष्मवतन में फरिश्तेपन को याद करो फिर पूज्य रूप याद करो, फिर ब्राह्मण रूप याद करो, फिर देवता रूप याद करो। । तो पांच मिनट में 5 यह एक्सरसाइज करो और सारे दिन में चलते फिरते यह कर सकते हो, इसके लिए मैदान नहीं चाहिए, दौड़ नहीं लगानी है, न कुर्सी चाहिए, न सीट चाहिए, न मशीन चाहिए। जैसे और एक्सरसाइज शरीर की आवश्यक है यह मन की ड्रिल, एक्सरसाइज, मन को सदा खुश रखेगी। उमंग-उत्साह में रखेगी, उड़ती कला का अनुभव करायेगी।

15-11-19 (revise 30-11-15) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"बेफिक्र बादशाह बनो और संपन्न और सामान बन साथ चलने की तैयारी करो "

- बेफिक्र आत्मा की निशानी है मस्तक में लाइट चमकती है और दूसरा ताज विकारों पर विजयी बने हो इसलिए ताज दिखाया है ।

- बापदादा ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। जानते हो तीन तख्त कौन से हैं? एक तख्त भ्रकुटी का, यह तो सबको है ही । दूसरा तख्त है बापदादा का दिलतख्त और तीसरा है विश्व का तख्त, राज्य का तख्त ।

- व्यर्थ संकल्प को समाप्त करना है तब दु:खी, अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति का अनुभव करा सकेंगे।

- अभी समय अनुसार तीव्र पुरुषार्थी बनने की आवश्यकता है। तीव्र पुरूषार्थी बनने के लिए मुख्य पुरूषार्थ है सेकण्ड में बिन्दी लगाना । सेकण्ड और बिन्दी, दोनों समान।

- लक्षण सिर्फ लक्ष्य नहीं लेकिन लक्ष्य के साथ लक्षण को अटेन्शन में रखो।

- बाप तो सेकण्ड में अशरीरी बन जायेंगे लेकिन आपने जो वायदा किया है, बाप ने भी वायदा किया है साथ चलेंगे, तो चेक करो उसकी तैयारी है ? सेकण्ड में बिन्दी लगाई, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन चला। तो ऐसी तैयारी है?

30-11-19 (revise 31-10-07) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"श्रेष्ठ स्वमान के फखुर में रह असंभव को संभव करते बेफिक्र बादशाह बनो "

- आप सभी विश्व की आत्माओं के पूर्वज भी हो और पूज्य भी हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त हो।

- यहाँ छोटा सा बच्चा भी मैं आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु को जानता है और ब्राहमण मातायें फलक से कहती हमने परमात्मा को पा लिया।

- पवित्रता हमारा स्वधर्म है। पर धर्म मुश्किल होता है, स्व धर्म सहज होता है।

- फखुर रहता है कि हम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हैं । इस नशे के कारण, निश्चय के कारण परमात्म बच्चे होने के कारण माया से भी बचे हुए हो। बच्चा बनना अर्थात् सहज बच जाना।

- हर एक बच्चे को यह रूहानी फखुर रहता है, दिल में गीत गाते हैं - पाना था वो पा लिया। दिल में यह स्वत: ही गीत बजता है ना । जितना इस फखुर में रहेंगे तो फखुर की निशानी है, बेफिक्र होंगे।

- साक्षी-द्दष्टा के स्थिति की सीट पर सेट हो जाओ और सीट पर सेट होके खेल देखो, बहुत मजा आयेगा, वाह! त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ। सीट से नीचे आते इसलिए अपसेट होते हो। सेट रहो तो अपसेट नहीं होंगे।

- यह तीन चीज़ें बच्चों को परेशान करती हैं। - चंचल मन, भटकती बुद्धि और पुराने संस्कार।

- जब कह ही रहे हो, मेरे संस्कार, तो मेरा बनाया है ? तो मेरे पर तो अधिकार होता ही है। जब पुराने संस्कार को मेरा बना दिया, तो मेरा तो जगह लेगा ना। यह पास्ट जीवन के संस्कार हैं। शूद्र जीवन के संस्कार हैं। ब्राह्मण जीवन के नहीं है। और यह संस्कार जिनको आप पुराने कहते हो, वह भी पुराने नहीं हैं, यह तो द्वापर मध्य के संस्कार हैं। मध्य के संस्कार को समाप्त कर देना, बाप की मदद से कोई मुश्किल नहीं है।

- आप श्रेष्ठ आत्माओं का पुराने ते पुराना संस्कार अनादि और आदि संस्कार है।

- पूज्यनीय आत्माओं का विशेष लक्षण दुआ देना ही है। आपका तो निजी संस्कार है - दुआ देना । अनादि संस्कार है दुआ देना। दुआ देना अर्थात् दुआ लेना अण्डरस्टुड हो जाता है। जो दुआ देता है, जिसको देते हैं उसकी दिल से बार-बार देने वाले के लिए दुआ निकलती है। वह आत्मा कितनी खुश होती है, वह खुशी का वायुमण्डल कितना सुखदाई होता है।

- सदा मैं पूज्य आत्मा हूँ, मैं बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूँ, इस स्मृति को बार-बार अपनी स्मृति और स्वरूप में लाना।

- जब लक्ष्य है, 16 कला बनने का। तो 16 कला अर्थात् परमपूज्य, पूज्य आत्मा का कर्तव्य ही है दुआ देना। यह संस्कार चलते फिरते सहज और सदा के लिए बनाओ।

- कभी भी हार खाना नहीं क्योंकि आप बाप के गले के हार हो। हार खाने वाले तो अनेक करोड़ों आत्मायें हैं, आप हार बनके गले में पिरोये गये हो।

15-12-19 (revise 30-01-10) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"चारो ही सब्जेक्ट में स्वमान के अनुभवी स्वरुप बन अनुभव की अथॉरिटी को कार्य में लगाओ "

- आप सभी बच्चों का सर्व आत्माओं के प्रति चैलेन्ज है कि हम योगी जीवन वाले हैं। सिर्फ योग लगाने वाले नहीं । जीवन का लक्ष्य ही है सदा योगी।

- जहाँ स्वमान है वहाँ देहभान आ नहीं सकता। आदि से अन्त तक, अब तक बापदादा ने हर एक बच्चे को भिन्न-भिन्न स्वमान दिये हैं। अगर अभी भी एक-एक स्वमान की माला फेरते जाओ तो अनेक स्वमान स्वरूप बन, स्वमान में लवलीन हो जायेंगे। स्वमान में स्थित होने में कभी-कभी मेहनत लगती है क्योंकि जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती है। जहाँ मेहनत है वहाँ मोहब्बत में कमी है ।

- स्वमान स्वरूप बन, अनुभवी मूर्त बन अनुभव के अथॉरिटी स्वरूप बनने में कमी दिखाई दी । सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव की अथॉरिटी है और यह स्वमान की अनुभूति आलमाइटी अथॉरिटी ने दी है।

- अनुभव स्वरूप कोई-कोई है। अनुभव में किसी भी प्रकार का देह अभिमान जरा भी अपने तरफ खींच नहीं सकता। तो अनुभव स्वरूप बन जाना, व स्वरूप में खो जाना, इसकी अभी और आवश्यकता है । हर बात में, हर सबजेक्ट में अनुभवी स्वरूप बनना, चाहे ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, चार ही सबजेक्ट में अनुभव स्वरूप बनना। अनुभवी को माया भी हिला नहीं सकती।

- जब स्वमान के सीट पर अनुभव का स्विच ऑन होता तो किसी भी प्रकार का देहभान आ नहीं सकता । भिन्न-भिन्न प्रकार के देह भान भी हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार के बाप ने स्वमान भी दिये हैं।

- हर एक अपने को चेक करो कि मैं कर्मयोगी जीवन वाला हूँ? सदा मस्तक से चमकती हुई लाइट खुद को भी अनुभव हो, जहाँ स्मृति के अनुभवी स्वरुप हैं वहाँ अपने में समर्थी हर कार्य करते हुए भी अनुभव होगी। कार्य भिन्न-भिन्न होंगे लेकिन अनुभव स्वरूप की स्थिति भिन्न-भिन्न नहीं हो । जहाँ मेहनत है या कभी कभी कहते हो, इसका अर्थ है उस सबजेक्ट में आप अनुभवीमूर्त नहीं बने हो। अनुभव कभी-कभी नहीं होता, नेचरल नेचर होती है ।

- अभी समय प्रमाण सब अचानक होना है। बताके नहीं होना है। जैसे अभी प्रकृति का अचानक बातों का खेल चल रहा है, आरम्भ हुआ है अभी । नई-नई बातें अचानक अर्थक्वेक हुआ, थोड़े समय में लाखों आत्मायें चली गई, इकट्ठे के इकट्ठे एक समय अनेकों की टिकेट कट रही है तो ऐसे समय में आप एवररेडी हैं? यह तो नहीं कहेंगे कि पुरूषार्थ कर रहा हूँ?

- एवररेडी अर्थात् कोई भी वरदान या स्वमान का संकल्प किया और स्वरूप बना।अगर कोशिश भी करनी है तो अभी से क्योंकि बहुत समय का अभ्यास समय पर मदद देगा।

- चेक करो ज्ञान स्वरूप बना हूँ? या ज्ञान सुनने और सुनाने वाला बना हूँ ? ज्ञान अर्थात् नॉलेज, नॉलेज का प्रैक्टिकल रूप है, नॉलेज को कहते हैं, नॉलेज इज लाइट, नॉलेज इज माइट, तो ज्ञान स्वरूप बनना अर्थात् जो भी कर्म करेंगे वह लाइट और माइट वाला होगा। यथार्थ होगा। ज्ञान सुनाने वाला नहीं, ज्ञान स्वरूप बनना। योग स्वरूप का अर्थ है कर्मेन्द्रियों जीत बनना। हर कर्मेन्द्रिय पर स्वराज्यधारी। इसको कहा जाता है योग अर्थात् युक्तियुक्त जीवन। ऐसे अगर ज्ञान योग का स्वरूप है तो हर गुण की धारणा ऑटोमेटिकली होगी। सेवा हर समय ऑटोमेटिक होगी।

- कोई आपके भाई या बहन ब्राहमण परिवार में थोड़ा सा मायूस है, थोड़ा पुरूषार्थ में डल है, कोई संस्कार के वश है, ऐसे सम्पर्क वाली आत्मा को आपने उमंग-उत्साह दिलाया, सहयोग दिया, स्नेह दिया, यह भी सेवा का पुण्य आपका जमा होता है। गिरे हुए को उठाना यह पुण्य गाया जाता है। तो सम्बन्ध और सम्पर्क में भी सेवा करना यह सच्चे सेवाधारी का कर्तव्य है। सेवा मिले या सेवा दी जाए तो सेवा है, वह नहीं। स्वयं मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्पर्क सम्बन्ध में सेवा ऑटोमेटिकली होती रहे।

- सच्चा सेवाधारी अपने सेवा का पुण्य कमाने का शुभ भावना अवश्य रखेगा। यह तो है ही ऐसा, यह बदल ही नहीं सकता, यह शुभ भावना नहीं, यह सूक्ष्म घृणा भावना है, फिर भी अपना भाई बहन है, फिर भी मेरा बाबा तो कहता है ना! तो सच्चे सेवाधारी सेवा के बिना शुभ भावना देना इस सेवा में भी पुण्य कमायेंगे। गिरे हुए को गिराना नहीं, उठाना। सहयोग देना, इसको कहेंगे सच्चे सेवाधारी, पुण्य आत्मा।

- जैसे ब्रहमा बाप ने क्या नहीं देखा, क्या नहीं किया, जिम्मेवार होते फिर भी अन्त में शुभ भावना, शुभ कामना के तीन शब्द सभी को शिक्षा देके गये। स्वयं भी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी इसी स्थिति में अव्यक्त बनें, किसी को भी कर्मभोग की फीलिंग नहीं दिलाई, किसने समझा कि कर्मभोग समाप्त हो रहा है ! क्या हो गया? अव्यक्त हो गया। ऐसे ब्रहमा बाप समान फरिश्ता भव का वरदान जो बाप ने करके दिखाया, फॉलो ब्रहमा बाप।

- बापदादा का यह संकल्प है कि इस शिवरात्रि पर या एक सप्ताह पहले या एक सप्ताह पीछे इन दिनों में अपने परिचित, अपने मोहल्ले वाले, अपने दफ्तर के कार्य करने वाले साथी, इन्हों को सन्देश जरूर दो कि अगर बाप से वर्सा लेना है तो ले लो। आपके मोहल्ले में कोई ऐसा नहीं रहे जो कहे कि हमको अभी लास्ट में सन्देश क्यों दिया। थोड़ा पहले तो देते तो हम भी कुछ बना तो लेते, नहीं तो लास्ट में तो सिर्फ अहो प्रभू कहते रहेंगे। आप आये हमने नहीं पहचाना। उल्हना देते रहेंगे।

31-12-19 (revise 31-12-08) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

नये वर्ष 2020 में परिवर्तन शक्ति के वरदान द्वारा निगेटिव को पॉजिटव में परिवर्तन कर संकल्प श्वांस समय को सफल कर सफलतामूर्त बनने की बधाई

- बाप ने वर्से के रूप में गोल्डन दुनिया की गिफ्ट दे दी है। यही नशा है ना कि यह गोल्डन दुनिया की सौगात तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

- इस नये वर्ष की विशेषता है कि बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरूषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बाप को फालो करना पड़े ।

- हर दिन अपने आपको चेक करना है कि सफलतामूर्त बन समय, श्वांस, खज़ाने, शक्तियां, गुण सब सफल किया ? क्योंकि अभी की सफलता से भविष्य भी जमा होता है। 21 जन्म जो भी सफल अभी किया, उसका फल जमा होता है।

- सबसे बड़ा खज़ाना है ज्ञान का, ज्ञान का अर्थ है समझ। तो ज्ञान का खज़ाना सफल करने से भविष्य में आप ऐसे समझदार बन जाते हैं जो आपको कोई वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ती है। स्वयं ही राज्य अखण्ड, अटल चलाते हो और आपके राज्य में कोई विघ्न नहीं।

- इस वर्ष लक्ष्य रखना है एक श्वांस, एक सेकण्ड भी असफल नहीं हो। सभी को लक्ष्य है कि बाप समान बनना ही है? बनना नहीं है, बनना ही है। बनना ही है अण्डरलाइन*।

- जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो बाप का यह संकल्प रहा ! बोल बोलते हो चेक करो, बाप समान बनना है ना ! तो संकल्प, बोल और कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क पहले सोचो, चेक करो बाप का यह रहा? और ऐसा ही स्वरूप बनो।

- कई बच्चे कहते हैं कि चलते-चलते आपोजीशन बहुत होती है, तो आपोजीशन के कारण पोजीशन से नीचे आ जाते हैं। जहाँ पोजीशन है वहाँ आपोजीशन कुछ नहीं कर सकती। सदा अगर आपोजीशन होती भी है तो स्वमान की सीट पर बैठ जाओ तो आपोजीशन, पोजीशन में बदल जाये।

- पहले स्व के परिवर्तन का, फिर है अनेक सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्मायें और फिर विश्व की आत्मायें। इन सबको अपने मन्सा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करना

- इस वर्ष में बापदादा विशेष एक शक्ति का वरदान भी दे रहे हैं। मेरा बाबा दिल से कहेंगे तो शक्ति हाजिर । परिवर्तन की शक्ति में विशेष निगेटिव को पॉजिटिव में चेंज करो।

- पॉज़िटिव देखना, बोलना, करना, सिर्फ शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा सहज हो जायेगा

- इस वर्ष का विशेष वरदान परिवर्तन शक्ति को दृढ़ संकल्प से कार्य में लगाना । जब टाइटिल ही विश्व परिवर्तक का है तो क्या स्व को परिवर्तन करना मुश्किल है क्या ! मास्टर सर्वशक्तिवान उसके आगे मुश्किल क्या है? यह गलती करते हो जो बात हो गई ना, उसके क्यूं, क्या, कब कैसे... इस क्यू क्यूं में चले जाते हो। छोटी सी बात बड़ी कर देते हो और बड़ी बात तो मुश्किल होती है।

- मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इस स्मृति की सीट पर बैठ जाओ, अगर इस सीट पर बैठेंगे तो अपसेट नहीं होंगे।

- नये वर्ष में अविनाशी बाप समान बनने वाले अविनाशी गिफ्ट दो। मन्सा द्वारा शक्तियों की गिफ्ट दो, वाचा द्वारा ज्ञान की गिफ्ट दो और कर्मणा द्वारा गुणों की गिफ्ट दो। हर समय मन्सा में शक्तियों का स्टाक इमर्ज रखना पड़ेगा, मन में मनन शक्ति, ज्ञान को मनन करने की शक्ति, स्मृति में रखनी पड़ेगी। चलन में, चेहरे में, कर्म में, गुणों का स्वरूप बनना पड़ेगा। सदा अपने को गुणमूर्त, ज्ञान मूर्त, शक्ति स्वरूप इमर्ज रखना पड़ेगा।

- खुशनसीब हो, खुश चेहरे वाले हो, कभी रोब का चेहरा नहीं बनाना। सदा खुश, कोई भी आपको चाहे जितना भी काम में बिजी हो, गलती को ठीक कर रहे हो, समझा रहे हो लेकिन रोब का चेहरा, बोल नहीं हो। इस वर्ष में यह परिवर्तन करके दिखाओ। प्राइज़ देंगे। सारे वर्ष में जो सदा मुस्कराता रहेगा, कोई भी बात आये ।

- जहाँ भी मुश्किल आवे ना बस दिल से कहना, *बाबा, मेरा बाबा, मेरा साथी आ जाओ, मदद करो। तो बाबा भी बंधा हुआ है। सिर्फ दिल से कहना।

- बापदादा ने देखा कि दु:खियों की पुकार, भक्तों की पुकार, समय की पुकार इतना सुनते कम हैं। बिचारे हिम्मतहीन हैं, उन्हों को पंख लगाओ तो उड़ तो सकें। हिम्मत के पंख, उमंग-उत्साह के पंख लगाओ।

18-1-20 (revise 18-1-07) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"स्वयं को मुक्त कर मास्टर मुक्तिदाता बन सब को मुक्ति दिलाने के निमित्त बनो "

- स्मृति दिवस पर अनेक बच्चों की स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पिरो रही हैं और बाप भी अपने स्नेही बांहों की माला बच्चों को पहना रहे हैं।

- स्मृति सामने आते समर्थी का नशा चढ़ जाता है। पहली पहली स्मृति है आप कल्प पहले वाली भाग्यवान आत्मा हो। इस पहली स्मृति से क्या परिवर्तन आ गया? आत्म अभिमानी बनने से परमात्म बाप के स्नेह का नशा चढ़ गया।

- दिल से पहला स्नेह का शब्द कौन सा निकला? "मेरा मीठा बाबा" और इस एक गोल्डन शब्द निकलने से नशा क्या चढ़ा? सारी परमात्म प्राप्तियां मेरा बाबा कहने से, जानने से, मानने से आपकी अपनी प्राप्तियां हो गई। जहाँ प्राप्तियां होती हैं वहाँ याद करनी नहीं पड़ती लेकिन स्वत: ही आती है, सहज ही आती है क्योंकि मेरी हो गई ना!

- बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष,समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। क्योंकि मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दु:खी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप से साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना !

- एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा। जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना। ऐसा नहीं होता, ऐसा होता ना। यह है बहाने बाजी करने का खेल।

- अभी इस वर्ष यह एडीशन करो कि जो भी सेवा करो, मानो मुख की सेवा करते हो, तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं, मन्सा वाचा और स्नेह सहयोग रूपी कर्म एक ही समय में तीन सेवायें इकट्ठी हों। अलग-अलग नहीं हों।

- बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे।

- बापदादा को स्नेह का रिटर्न है - स्वयं को और विश्व को टर्न करना । बस रिटर्न में रि निकाल दो तो टर्न हो जाएगा । रहमदिल आत्मा बनके आत्माओं को सन्देश देना यह *बाप समान सेवाधारी* बनना है

- मुरली से प्यार अर्थात मुरलीधर से प्यार । कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है लेकिन मुरली कभी कभी सुन लेते हैं तो बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं । प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है । जिसको मुरली से प्यार है वह है प्यार

निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में है निभाने वाले नहीं । मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है । मधुबन की धरनी का ही महत्त्व है ।

2-02-20 (revise 30-11-10) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"हर घंटे मन की एक्सरसाइज कर उसे शक्तिशाली बनाओ, जब बाबा ही संसार है तो संस्कार भी बाबा जैसा बनाओ "

- आज बापदादा सभी बच्चों के स्वरूपों को विशेष 5 रूपों को देख रहे हैं इसलिए 5 मुखी ब्रहमा का भी गायन है ।

- पहला सभी का ज्योति बिन्दु रूप चमकता हुआ प्यारा रूप । दूसरा देवता रूप वह रूप भी कितना प्यारा और न्यारा है। तीसरा रूप मध्य में पूज्यनीय रूप चौथा रूप ब्राहमण रूप संगमवासी वह भी कितना महान है और पांचवा रूप फरिश्ता रूप। यह 5 ही रूप कितने प्यारे हैं।

- सारे दिन में इन 5 रूपों की मन को एकरस बनाने की एक्सरसाइज करो और अनुभव करो जो रूप सोचो उसका मन में अनुभव करो।

- हर घण्टे में 5 सेकण्ड इस ड्रिल में लगाओ। अगर सेकण्ड नहीं तो 5 मिनट लगाओ। मन को इस रूहानी एक्सरसाइज में बिजी करो तो मन एक्सरसाइज से सदा ठीक रहेगा। जैसे शरीर की एक्सरसाइज शरीर को तन्दरूस्त रखती है ऐसे यह एक्सरसाइज मन को शक्तिशाली रखेगा*।

- बार-बार यह एक्सरसाइज करो तो कार्य करते भी यह नशा रहेगा क्योंकि बाप का मन्त्र भी है मनमनाभव। इसी मन्त्र को मन के अनुभव से मन यन्त्र बन जायेगा मायाजीत बनने में क्योंकि जितना समय आगे बढ़ेगा उस अनुसार एक सेकण्ड में स्टॉप लगाना होगा। तो यह एक्सरसाइज करने से मनमनाभव होने में मदद मिलेगी। मन व्यर्थ अयथार्थ से बच जाये, मन इतना आर्डर में रहे उसके लिए यह मन की एक्सरसाइज बताई।

- बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा ऐसा शक्तिशाली बने जो जो संकल्प करे वही मन बुद्धि संस्कार आर्डर में हो। जिसका यह अभ्यास होगा वह जगतजीत अवश्य बनेगा।

- संस्कार का काम है आना और बच्चों का काम है समाप्त करना ही है। बाप का कार्य है लक्ष्य देना और बच्चों का कार्य है जो बाप ने कहा वह करना ही है। इसकी भी एक डेट फिक्स करो जो डेट फिक्स की ना वह बापदादा को लिखके देना। बापदादा भी बच्चों को पेपर पास करने की बहादुरी तो देंगे ना। फिर गीत गायेंगे वाह बच्चे वाह !

सेरीमनी मनायेंगे जिसने संकल्प किया और उसी अनुसार प्रैक्टिकल किया उसकी सेरीमनी मनायेंगे ।

- हर एक बच्चे को यह शुद्ध नशा तो है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मास्टर तो हो ना? जब सर्वशक्तिवान हैं तो संकल्प को पूरा करना यह भी शक्ति है ना!

- बापदादा ने बहुत समय से यह कहा है कि कोई भी सेन्टर चाहे देश चाहे विदेश सेन्टर उसके कनेक्शन में सेन्टर निर्विघ्न 6 मास रह कोई भी विघ्न नहीं आये। निर्विघ्न। अगर नम्बरवन बनेगा तो उसकी भी निर्विघ्न भव की डे मनायेंगे। अभी 6 मास कह रहे हैं 6 मास का अभ्यास होगा तो आगे भी आदत हो जायेगी। लेकिन इनाम लेने के लिए 6 मास का टाइम देते हैं।

- अभी जल्दी जल्दी कदम को आगे करना क्यों? *अचानक क्या भी हो सकता है। तारीख नहीं बतायेंगे।

- बापदादा सभी बच्चों को यही कहते हैं कोई नवीनता करो अभी। जो चल रहा है समय अनुसार वह नवीनता है लेकिन अभी और नवीनता इन्वेन्शन करो कोई भी जोन करे लेकिन नया निकालो।

- बापदादा यही आशा रखते हैं कि अभी चेहरे और चलन से ऐसे लगना चाहिए कि यह आत्मायें सभी के आगे एक सैम्पुल हैं। जो निमित्त हैं उन्हों के लिए इशारा करें अगर देखना हो तो इस आत्मा को देखो।

- बापदादा की यही आश है कि अभी जल्दी से जल्दी सबको यह सन्देश पहुंचाना है कोई वंचित नहीं रहे। कुछ न कुछ वर्सा ले लें। चाहे जीवनमुक्ति का नहीं तो प्यार से मुक्ति का वर्सा तो ले लें क्योंकि बाप को सबको वर्सा देना है। जितनों को वर्सा दिलायेंगे उतना आपको भी अपने राज्य में राज्य अधिकारी बनने का वर्सा मिलेगा।

20-02-20 (revise 15-02-07) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद से जागकर सच्ची शिवरात्रि जागरण मनाने की बधाई "

- आप सभी भी आज विशेष विचित्र बर्थ डे मनाने आये हो ना! यह बर्थ डे सारे कल्प में किस का नहीं होता कि बाप और बच्चे का एक ही दिन में बर्थ डे हो। क्योंकि सारे कल्प में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का इतना अथाह प्यार है जो जन्म भी साथ-साथ है।

- बाप को अकेला विश्व परिवर्तन का कार्य नहीं करना है, बच्चों के साथ-साथ करना है। यह अलौकिक साथ रहने का प्यार, साथी बनने का प्यार इस संगम पर ही अनुभव करते हो।

- बापदादा सभी बच्चों का उत्साह देख बच्चों को भी अपने दिव्य जन्म की पदम-पदम-पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। वास्तव में उत्सव का अर्थ ही है उमंग-उत्साह में रहना। तो आप सभी उत्साह से यह उत्सव मना रहे हैं। नाम भी भक्तों ने शिवरात्रि रखा है।

- आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते और उस भगत आत्मा ने भावना, श्रद्धा के रूप में आपके मनाने की कापी अच्छी की है

- इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हों को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने एक ही बार व्रत लिया पवित्रता का।

- पवित्रता ब्राह्मण जन्म की प्रापर्टी है, पर्सनैलिटी है, रॉयल्टी है। ऐसे तो नहीं, मुख्य पवित्रता के ऊपर अटेन्शन है लेकिन और जो साथी हैं, उसको हल्का तो नहीं छोड़ा है? पवित्रता सिर्फ ब्रहमचर्य को नहीं कहा जाता, ब्रहमाचारी। ब्रहमाचारी बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत पालन किया।

- कहते हैं बाबा मुख्य तो अच्छा है ना, बाकी छोटे-छोटे ऐसे कभी मन्सा संकल्प में आ जाते हैं। मन्सा में आते हैं, वाचा में नहीं आते और मन्सा को तो कोई देखता नहीं है। और कोई फिर कहते हैं कि छोटे छोटे बाल बच्चों से प्यार होता है ना। तो इन चारों से भी प्यार हो जाता है। क्रोध आ जाता है, मोह आ जाता है, चाहते नहीं हैं आ जाता है। कोई भी आता है तो आपने दरवाजा खोला है तब आता है ना दरवाजा खोला है कमज़ोरी का, कमज़ोरी का दरवाजा खोलना अर्थात् आहवान करना।

- आज के दिन जो जन्मते व्रत का वायदा किया है। पहला-पहला वरदान बाप ने पवित्र भव, योगी भव का दिया। पवित्र भव का वरदान एक का नहीं दिया, पांचों का दिया।

- आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं, तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं। तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है।

- दूसरे को देखना सहज होता है, अपने को देखने में थोड़ी हिम्मत चाहिए। आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेने आये हैं। कमज़ोरी और बहानेबाजी का हिसाब

- कभी भी कमज़ोरी आ जाए, आने नहीं देना, गेट बन्द। डबल बन्द करो, डबल ताला लगाना, आजकल सिंगल ताला नहीं चलता। एक याद का, एक मन को सेवा में बिजी रखने का। यह दो आलमाइटी ताले लगा देना। गाडरेज का नहीं गॉड का । पक्का जागरण करना, पक्का व्रत रखना।

- जिसका एक बाप से प्यार है वह एक समान एक ही नम्बर 1 बनेंगे। जो स्लोगन है एक बाप ही संसार है, जब है ही एक संसार तो नम्बर एक हुआ ना।

- अपनी कमी को रियलाइज करते भी हो लेकिन परिवर्तन करने में कमी पड़ जाती है। उसमें बापदादा ने देखा है एक दृढ़ता की कमी है और दूसरी मन को एकाग्र करने की विशेषता जिस घड़ी चाहे उस घड़ी मन एकाग्र हो जाए, जहाँ चाहो वहाँ हो जाए, इसकी कमी है।

- दृढ़ता और एकाग्रता, अभी तक वेस्ट है, एकॉनामी नहीं है । संकल्प, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, हर संस्कार स्वभाव में भी एकॉनामी से खर्च करो। एकॉनामी भी जरूरी है। यज्ञ की एकॉनामी, जितनी संकल्पों की एकॉनामी होगी उतनी यज्ञ की एकॉनामी के बिना रह नहीं सकेंगे ।

6-03-20 (revise 31-03-07) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"सपूत बन अपनी सूरत से बाप की सूरत दिखाना, निर्माण (सेवा) के साथ निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति का बैलेंस रखना"

- सभी बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की रेखा चमक रही है। नयनों में रूहानियत् की भाग्य रेखा दिखाई दे रही है। मुख में श्रेष्ठ वाणी के भाग्य की रेखा दिखाई दे रही है। होठों में रूहानी मुस्कराहट देख रहे हैं। हाथों में सर्व परमात्म खज़ाने की रेखा दिखाई दे रही है। हर याद के कदम में पदमों की रेखा देख रहे हैं। हर एक के हृदय में बाप के लव में लवलीन की रेखा देख रहे हैं। अविनाशी बाप है और अविनाशी भाग्य की रेखायें हैं।

- इस समय श्रेष्ठ कर्म के आधार पर सर्व रेखायें प्राप्त होती हैं। इस समय का पुरूषार्थ अनेक जन्म की प्रालब्ध बना देती है। अभी के यह दिव्य संस्कार आपका नया संसार बना रहा है।

- चेक करो अभी भी मन में, बुद्धि में, सम्बन्ध-सम्पर्क में, जीवन में एक राज्य है? वा कभी-कभी आत्मा के राज्य के साथ-साथ माया का राज्य भी तो नहीं है?

- चेक करो कि पवित्रता सम्पूर्ण है? स्वप्न में भी अपवित्रता का नामनिशान नहीं हो। पवित्रता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में एक ही धारणा सम्पूर्ण पवित्रता की हो। ब्रहमाचारी हो।

- चेक करो अविनाशी सुख, परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है? ऐसे तो नहीं, कोई साधन वा कोई सैलवेशन के आधार पर सुख का अनुभव तो नहीं होता ? कभी दु:ख की लहर किसी भी कारण से अनुभव में नहीं आनी चाहिए। कोई नाम, मान-शान के आधार पर तो सुख अनुभव नहीं होता है ? यह नाम,मान शान, साधन, सैलवेशन यह

स्वयं ही विनाशी हैं, अल्पकाल के हैं। तो विनाशी आधार से अविनाशी सुख नहीं मिलता।

चेक करते जाओ तो पता पड़ेगा कि अब के संस्कार और भविष्य संसार की प्रालब्ध में कितना अन्तर है ! सिर्फ अभी पुरूषार्थ नहीं करना है लेकिन पुरूषार्थ की प्रालब्ध भी अभी अनुभव करनी है। सुख के साथ शान्ति को भी

चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी आप शान्ति सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हो? शान्त वायुमण्डल है, उसमें आपने शान्ति अनुभव की, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका वायदा है अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करने वाले हैं। परिवर्तक हो परवश तो नहीं हो ना?

ज्ञान, गुण और शक्तियां स्वराज्य अधिकारी की सम्पत्तियां यह हैं। तो चेक करो - ज्ञान के सारे विस्तार के सार को स्पष्ट जान गये हो ना ? ज्ञान का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ भाषण किया, कोर्स कराया, ज्ञान का अर्थ है समझ। तो हर संकल्प, हर कर्म बोल ज्ञान अर्थात् समझदार, नॉलेजफुल बनके करते हैं? सर्वगुण प्रैक्टिकल जीवन में इमर्ज रहते हैं?* इस प्रकार सर्व शक्तियां आपका टाइटिल है - मास्टर सर्वशक्तिवान, शक्तिवान नहीं हैं। तो सर्व शक्तियां सम्पन्न हैं ? और दूसरी बात सर्व शक्तियां समय पर कार्य करती हैं? समय पर हाजिर होती हैं या समय बीत जाता है फिर याद आता है? तो चेक करो तीनों ही बातें एक राज्य, एक धर्म और अविनाशी सुख-शान्ति, सम्पत्ति इन सभी बातों का अनुभव कर सकते हैं। अभी से यह संस्कार इमर्ज होंगे तब अनेक जन्म प्रालब्ध के रूप में चलेंगे।

बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है कि बहुतकाल का अभी का अभ्यास बहुतकाल की प्राप्ति का आधार है। अन्त में हो जायेगा नहीं सोचना, हो जायेगा नहीं, होना ही है। क्यों? स्वराज्य का जो अधिकार है वह अभी बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नहीं बन सकते, अधीन बन जाते तो अनेक जन्म कैसे होंगे! अभी समय की रफ्तार तीव्रगति में जा रही है इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरूषार्थी नहीं बनना है लेकिन तीव्र पुरूषार्थी बन, पुरूषार्थ की प्रालब्ध का अभी बहुतकाल से अनुभव करना है।

तीव्र पुरूषार्थी सदा मास्टर दाता होगा, लेवता नहीं देवता, देने वाला। यह हो तो मेरा पुरूषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करूं, यह बदले तो मैं भी बदलूं, यह बदले, यह करे, यह दातापन की निशानी नहीं है। कोई करे न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करूं, ब्रहमा बाप समान भी, साकार में भी देखा, बच्चे करें तो मैं करूं, कभी नहीं कहा, मैं करके बच्चों से कराऊं। दूसरी निशानी है तीव्र पुरूषार्थ की सदा निर्मान, कार्य करते भी निर्मान, निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स चाहिए। निर्मान बनकर कार्य करने में सर्व द्वारा दिल का स्नेह और दुआयें मिलती हैं।

- निर्मान स्वभाव, निर्मान बोल और निर्मान स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना । निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति उसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

- *ख़ज़ाने के तीन खाते जमा करो, तीन खाते कौन से हैं? एक है अपने पुरूषार्थ से जमा का खाता बढ़ाना। दूसरा है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रहे और दूसरे को भी सन्तुष्ट करे, भिन्न-भिन्न संस्कार को जानते हुए भी सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना इससे दुआओं का खाता जमा होता है। अगर किसी भी कारण से सन्तुष्ट करने में कमी रह जाती है तो पुण्य के खाते में जमा नहीं होता। सन्तुष्टता पुण्य की चाबी है। चाहे रहना, चाहे करना। और तीसरा है - सेवा में भी सदा नि:स्वार्थ, मैं पन नहीं। यह मैं और मेरापन जहाँ सेवा में आ जाता है वहाँ पुण्य का खाता जमा नहीं होता। दुआओं का खाता और पुण्य का खाता वह अभी भरने की आवश्यकता है। इसलिए तीनों खाते जमा करने का अटेन्शन।

18-03-20 (revise 18-02-08) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

“ संगठन एवं शान्ति की शक्ति से विश्व 🌎 परिवर्तन ”

- जैसे समय समीप आ रहा है उसी प्रमाण हर एक बच्चे के दिल में यह संकल्प, यह उमंग-उत्साह है कि अभी कुछ करना ही है क्योंकि देख रहे हो कि आज की तीनों सत्तायें अति हलचल में हैं। चाहे धर्म सत्ता, चाहे राज्य सत्ता, चाहे साइंस की सत्ता, साइन्स भी अभी प्रकृति को यथार्थ रूप में चला नहीं सकती। क्योंकि साइंस की सत्ता है प्रकृति द्वारा सत्ता को कार्य करना। तो प्रकृति भी साइंस के साधन हाते प्रयत्न करते अभी कन्ट्रोल में नहीं है और आगे चलकर यह प्रकृति के खेल और भी बढ़ते जायेंगे क्योंकि प्रकृति में भी अभी आदि समय की शक्ति नहीं रही है।

- अभी कौन सी सत्ता परिवर्तन कर सकती ! यह साइलेन्स की शक्ति विश्व परिवर्तन करेगी । सिवाए परमात्म पालना के अधिकारी आत्मा के और कोई नहीं कर सकता। तो आप सभी को यह उमंग-उत्साह है कि हम ही ब्राहमण आत्मायें बापदादा के साथ भी हैं और परिवर्तन के कार्य के साथी भी हैं।

- जितना ही दुनिया में तीनों सत्ता की हलचल है उतना आप शान्ति की देवियां, शान्ति के देव जितना शक्तिशाली शान्ति की शक्ति को प्रयोग करना चाहिए उतना कम है। सेवा के क्षेत्र में आवाज अच्छा फैला रहे हैं, लेकिन साइलेन्स की शक्ति में कम, तो बापदादा यह विशेष इशारा दे रहे हैं कि अभी शान्ति की शक्ति के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ।

- सेवा के सफलता का प्रत्यक्ष फल शान्ति की शक्ति के बिना, जितना चाहते हैं उतना नहीं निकल सकता क्योंकि अपने लिए भी सारे कल्प की प्रालब्ध को तभी बना सकते हैं। इसके लिए अभी हर एक को स्व के प्रति, सारे कल्प की प्रालब्ध राज्य की और पूज्य की इकट्ठा करने के लिए अभी समय है क्योंकि समय नाज़ुक आना ही है। ऐसे

समय पर शान्ति की शक्तियों द्वारा टचिंग पावर कैचिंग पावर बहुत आवश्यक होगी। ऐसा समय आयेगा जो यह साधन कुछ नहीं कर सकेंगे, सिर्फ आध्यात्मिक बल, बापदादा के डायरेक्शन्स की टचिंग कार्य करा सकेगी।

चेकिंग: अपने में चेक करो - बापदादा की ऐसे नाजुक समय में मन और बुद्धि में टचिंग आ सकेगी ? इसमें बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, इसका साधन है मन बुद्धि सदा ही कभी कभी नहीं, सदा क्लीन और क्लीयर चाहिए। अभी रिहर्सल बढ़ती जायेगी और सेकण्ड में रीयल हो जायेगी। जरा भी अगर किसी भी साथी सहयोगी के प्रति जरा भी निगेटिव होगा तो उसको क्लीन और क्लीयर नहीं कहा जायेगा। सारे दिन में चेक करो - साइलेन्स पावर कितनी जमा की?* सेवा करते भी साइलेन्स की शक्ति अगर वाणी में नहीं है तो प्रत्यक्ष फल सफलता जितना चाहते हैं उतनी नहीं होगी। मेहनत ज्यादा है फल कम। बार-बार चेक करो। स्व प्रति शान्ति की शक्ति जमा करने का, परिवर्तन करने का और अटेन्शन।

अभी सारी दुनिया ढूंढ रही है कि आखिर विश्व परिवर्तक निमित्त कौन बनता है! क्योंकि दिन प्रतिदिन दु:ख और अशान्ति बढ़ रही है और बढ़नी ही है। तो भक्त अपने इष्ट को याद कर रहे हैं, कोई अति में जाके परेशानी से जी रहे हैं। धर्म गुरूओं के तरफ नज़र घुमा रहे हैं। और साइंस वाले भी अभी यही सोच रहे हैं कैसे करें, कब तक होगा। तो इन सबको जवाब देने वाले कौन? सबकी दिल में यही पुकार है कि आखिर भी गोल्डन मॉर्निंग कब आनी है। तो आप सभी लाने वाले हो ना! इतने सारे निमित्त हैं तो कितने समय में होना चाहिए!

मीटिंग एवं प्लान :* आपस में जैसे सर्विस की मीटिंग करते हो, प्राब्लम हल करने के लिए ऐसे यह मीटिंग करो, यह प्लैन बनाओ। याद और सेवा। याद का अर्थ है शान्ति की पावर और वह प्राप्त होगी, जब आप टॉप की स्टेज पर होंगे। सबसे टॉप क्या है! परमधाम। बापदादा कहते हैं सेवा की और फिर टॉप की स्टेज पर बाप के साथ आकर बैठ जाओ। जैसे थक जाते हैं ना तो 5 मिनट भी कहाँ शान्ति से बैठ जाते हैं ना । ऐसे ही बीच-बीच में बाप के साथ आकर बैठ जाओ। और दूसरा टॉप का स्थान है सृष्टि चक्र को देखो, सृष्टि चक्र में टॉप स्थान कौन सा है? संगम पर आके सुई टॉप पर दिखाते हो ना। तो नीचे आये, सेवा की फिर टॉप स्थान पर चले जाओ। तो *समय आपको पुकार रहा है या आप समय को समीप ला रहे हो? रचता कौन?

एक दो के बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते, हाँ जी, हाँ जी करने से संगठन की शक्ति साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी। जिसमें सबके एक ही स्वभाव, एक ही संस्कार, एक ही सेवा का लक्ष्य, शान्ति की शक्ति कैसे फैलायें ,उसके प्लैन बनाओ।

03-04-20 (revise 15-12-09) अव्यक्त मुरली मुख्य पॉइंट्स :

"परिवार के साथ प्रीत निभाने के लिए नॉलेजफुल बन बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रह, बाप, स्व, ड्रामा और परिवार चारों में निश्चयबुद्धि बन विजयी बनो"

- बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है । बाप की पूजा एक रूप में होती है। तो बच्चे बाप से भी बाप द्वारा आगे जाते हैं इसलिए बाप बच्चों के पुरूषार्थ को देख खुश है।

- ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय। कहा हुआ भी है निश्चयबुद्धि विजयी। सभी का नम्बरवार बाप में तो निश्चय है ही, लेकिन बाप के साथ और भी निश्चय पक्का होना चाहिए वह है स्व में निश्चय। साथ में ड्रामा में निश्चय और परिवार में निश्चय। इन चार प्रकार के निश्चय में पक्के होना अर्थात् निश्चयबुद्धि विजयन्ती बनना। तो चेक करो कि इन चार निश्चय में पक्के हैं?

- स्व में भी निश्चय जरूरी है । अगर स्व में निश्चय नहीं है तो दिलशिकस्त बन जाते हैं । स्व में निश्चय यही है कि मैं बाप द्वारा स्वमानधारी हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। स्वयं बाप ने मुझे कितने स्वमान दिये हैं। स्वयं बापदादा ने हर बच्चे को स्वमानधारी बनाया है। तो स्व में भी इतना सदा निश्चय का नशा रहे कि मैं बाप द्वारा स्वराज्य अधिकारी, स्वमान अधिकारी कोटो में कोई आत्मा हूँ। अगर स्व में निश्चय है तो जहाँ निश्चय है वहाँ हर कर्म में निश्चयबुद्धि अर्थात् स्वमानधारी विजयी है। निश्चय का अर्थ ही है सफलता।

- तीसरी बात तो ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो ड्रामा के निश्चय से जो निश्चयबुद्धि है वह समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देता है क्योंकि निश्चय अर्थात् विजय। एक सेकण्ड में समस्या परिवर्तन हो समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अडोल अचल बन जाते हैं। फखुर रहता है, नशा रहता है मैं थी, मैं ही हूँ और मैं ही बनेंगी । इसलिए इस पुरूषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है ।

- चौथा है परिवार का निश्चय क्योंकि बाप ने आते ही परिवार को पैदा किया। तो परिवार में भी निश्चय अति आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार विश्व में किसका है? परिवार की रीति से किसी भी डिवाइन फादर का भी नहीं है वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते हो। परिवार का निश्चय तो आपका 21 जन्म चलना है। परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहे हैं, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप एक राज्य, तो एक होके चलना है। परिवार में जैसे बड़ा परिवार है, ऐसे ही

एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि परिवार के बीच ही संस्कार स्वभाव आता है। लेकिन यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है, सिर्फ धर्म नहीं है, दूसरे जो भी धर्म पिता आये हैं उनका सिर्फ धर्म है, राज्य नहीं है, यहाँ तो आप सबको राज्य भी करना है। तो राज्य में परिवार की आवश्यकता होती है और 21 जन्म भिन्न-भिन्न रूप से परिवार के साथ ही रहना है, परिवार को छोड़ कहाँ जा नहीं सकते। अगर इन चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे।

बाप ने देखा है कि तीन निश्चय में मैजारिटी ठीक चल रहे हैं लेकिन परिवार के साथ में निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में साथ में आते हैं, रहते हैं वही नम्बरवन या नम्बरवन डिवीजन में आते हैं। परिवार के सम्बन्ध में आना, क्योंकि परिवार को छोड़ तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है, निभाना ही है। तो इसमें पास हो? कभी ऐसे आता है कि यह नहीं होता तो अच्छा होता, यह क्यों करते हैं, यह क्यों होता है, यह संकल्प आता है... एकदम परिवार का नशा, चार ही निश्चय वाला कभी भी ऐसे वैसे संकल्प में भी नहीं करेगा। संकल्प में आये कि ऐसे क्यों होता है, लेकिन मुझे वह क्यों वा क्या हिलावे नहीं, मूड नहीं बदली करे। इसको कहते हैं चार ही में पास।

परिवार ही एक है। एकमत होके चलना और चलाना है। सिर्फ चलना नहीं है, चलाना भी है इसलिए बापदादा इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि परिवार में जो किसी भी हलचल में पास हो जाते हैं, व्यर्थ नहीं चलता है, उन्हें दूसरों को ऐसा बनाना है। ऐसे हर एक अपने को चेक करे, परिवार में किसी भी बात में संस्कार खराब हैं, लेकिन मेरा संस्कार क्या? अगर खराब को देख मेरा संस्कार भी खराब हो गया, तो मैं भी तो खराब हो गया।

विनाश की तैयारियां होते भी अभी विनाश रूका हुआ है। प्रकृति भी बाप के पास आती है, प्रकृति भी कहती अब बहुत बोझ हो गया है। प्रकृति भी बोझ से छूटने चाहती है। माया भी कहती है कि मैं जानती हूँ कि मेरा पार्ट अभी जाने वाला है लेकिन ब्राहमण परिवार में ऐसे भी बच्चे हैं जो छोटी बात में मेरे साथी बन जाते हैं। बिठा देते हैं मेरे को। तो अपना राज्य लाने में यह चार निश्चय परसेन्ट में हैं इसलिए समय भी रूक रहा है। बाकी माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं। अब बताओ आर्डर करें? *बच्चे अगर एवररेडी नहीं हैं तो माया और प्रकृति को आर्डर करें? करें? तैयार हो? ऐसे नहीं हाथ उठाओ। पेपर आयेगा, आयेगा पेपर। एवररेडी?

अभी बापदादा की हर बच्चे में यही आशा है कि कैसे को मिटाके ऐसे करो। कैसे करूं, कैसे हो, नहीं। ऐसे हो। क्या करें नहीं, ऐसे करें। यह आश कब तक पूरी करेंगे? कितना टाइम चाहिए? क्योंकि सभी को तैयार होना है।

जो समझता है बापदादा से हमारे दिल का प्यार 100 परसेन्ट है। तो प्यार का रिटर्न क्या होता है? प्यार का रिटर्न होता है समान बनना, सम्पन्न बनना, सम्पूर्ण बनना। दोनों से प्यार है ना। दोनों के समान बनने चाहते हो। तो शिव बाप है निराकारी, ठीक है और ब्रह्मा बाप है फरिश्ता। आज से ही अभी से सारे दिन में दोनों बाप से प्यार है तो कभी अपने को निराकार बाप समान निराकारी स्थिति में अभ्यास करो, फालो फादर। और कभी फरिश्ता बनकरके साकार रूप ब्राहमण नहीं, ब्राहमण तो हो ही, कर्म भले करो लेकिन कर्म करते भी फरिश्ता स्थिति में रहो तो कर्म का बोझ प्रभाव नहीं डालेगा। तो कभी फरिश्ता रूप में रहो, कभी निराकार स्थिति में रहो, यह प्रैक्टिस, ब्रहमा बाबा कहके ब्रहमा बाप समान फरिश्ता बन जाओ और शिव निराकार बाप को याद कर निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ, बीच-बीच में ऐसे करें जो लगातार हो जाए, अपने कर्म के हिसाब से जो आपकी दिनचर्या है उसके हिसाब से फिक्स करो। कम से कम सारे दिन में 12 बारी फरिश्ता बनो, 12 बारी निराकार स्थिति में स्थित रहो, यह कर सकते हो? यह पक्का करो। फिर तो जो लक्ष्य रखा है ना, इस सीजन के अन्त तक परिवर्तन हो सकता है। अगर यह ड्रिल 24 टाइम करेंगे तो लगातार हो जायेगा ना।

आप सबका भी यही लक्ष्य है ना कि दु:खियों को सन्देश दे मुक्त करें। उन्हों को मुक्त करने के बिना आप मुक्ति में जा नहीं सकते। तो इन्हों को मुक्त करो क्योंकि बाप आया है ना तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन सभी बच्चे तो है ना। उनको भी वर्सा तो देना है ना। तो उन्हों का वर्सा है मुक्ति, आपका वर्सा है जीवनमुक्ति। जब तक मुक्ति नहीं देंगे तो आप भी जा नहीं सकते। इसके लिए यह ड्रिल करो। 24 बारी। रात और दिन के 24 घण्टे हैं और 24 बार करना है, नींद के टाइम, नींद भले करो। बापदादा यह नहीं कहते कि नींद नहीं करो। नींद करो लेकिन दिन में बढ़ाओ।

On godly service
BK Anil Kumar
pathakau71@gmail.com